स्वतंत्र एवं शाश्वत आत्मा की सत्ता निराधार है देह ही आत्मा है (देहात्मवाद)

चेतना की उत्पत्ति

चार्वाक के अनुसार शरीर में चेतना की उत्पत्ति चार प्रकार के जड़ तत्वों के विशिष्ट मिश्रण से होता है। यहाँ एक प्रश्न स्वभावत: खड़ा होता है कि जब जड़ तत्वों में यथा- जल, वायु एवं अग्नि में चेतना नहीं होती तो इनके संयोग से चेतना कैसे उत्पन्न हो जाता है।

चार्वाक इसका उत्तर दृष्टांतो से देते हैं। जिस प्रकार पान, कत्था, चुना व सुपारी में लालपन नहीं होता किन्तु उनके विशिष्ट सम्मिश्रण से लालिमा उत्पन्न हो जाती है उसी प्रकार जड़ तत्वों में चेतना न होने पर भी उनके विशिष्ट सम्मिश्रण से चेतना का प्रादुर्भाव हो जाता है।

ईश्वर संबंधी विचार

चार्वाक प्रत्यक्षवादी है अत: वैसे सभी सत्ताओं की जिनका प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है. उसे नहीं मानते हैं। ईश्वर का उनके द्वारा अस्वीकरण इसी दृष्टिकोण का परिणाम है।

चार्वाक के अनुसार ईश्वर का अस्तित्व नहीं है क्योंकि ईश्वर प्रत्यक्ष का विषय नहीं है। ईश्वर न तो जगत का निमित्त कारण है और न ही उपादान कारण है। यह जगत निष्प्रयोजन है अत: प्रयोजनकर्ता के रूप में भी ईश्वर को नहीं माना जा सकता है। चार्वाक के अनुसार यह जगत जड़तत्वों के निहित स्वभाव का परिणाम है। इन जड़तत्वों के आकस्मिक संयोग से जगत उत्पन्न होता है।

चार्वाक का आत्मा विचार

परिचय :

चार्वाक का तत्वमीमांसा संबंधी विचारधारा उनके ज्ञानमीमांसीय सिद्धांतों पर आधारित है। अतः चार्वाक वैसे सभी सत्ताओं का जिनका प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है, खंडन करते हैं। चार्वाक द्वारा प्रस्तुत आत्मा विचार भी इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है।

चार्वाक शरीर से पृथक नित्य, स्वतंत्र एवं शाश्वत आत्मा की सत्ता को नहीं मानते हैं क्योंकि आत्मा प्रत्यक्ष का विषय नहीं है।

चेतना आत्मा संबंध : देहात्मवाद

चार्वाक चेतना को मानते हैं किन्तु उसे किसी शाश्वत आत्मा से नहीं जोड़ते। ज्ञातव्य है कि प्रायः भारतीय दर्शन में चेतना को नित्य आत्मा से जोड़ा जाता है। जैसे न्याय-वैशेषिक एवं प्रभाकर चेतना को आत्मा का आगन्तुक गुण कहते हैं जबकि जैन दर्शन एवं रामानुज ने चेतना को आत्मा का आनिवार्य गुण कहा है। वही सांख्य एवं वेदांत आत्मा को चैतन्य स्वरूप मानता है। चार्वाक का विचार इनसे अलग है।

चार्वाक के अनुसार चेतना शरीर का आगन्तुक गुण है। चार्वाक इसके लिए निम्न तर्क देता है –

1. अन्वय पर आधारित :- जब तक शरीर रहता है तभी तक चेतना रहती है।
2. व्यतिरेक पर आधारित :- जब शरीर का विनाश होता है तो आत्मा भी समाप्त हो जाता है।
3. दैनिक अनुभव पर आधारित :- 'मैं मोटा हूँ' या 'मैं पतला हूँ' जैसे वाक्य चेतना का शरीर से अभिन्नता बताता है।

चार्वाक कहते हैं कि तथाकथित आत्मा चैतन्य विशिष्ट शरीर के अतिरिक्त कुछ नहीं है। शरीर से पृथक

तत्वमीमांसा की आलोचना

1. बेहोशी, कोमा एवं निद्रा में

चेतना जब शरीर का गुण है तो उसे सदा शरीर के साथ ही रहना चाहिए पर बेहोशी कोमा या गहरी निद्रा में चेतना का लोप हो जाता है।

2. चेतना का प्रत्यक्ष नहीं

यदि चेतना शरीर का गुण है तो शरीर के अन्य अंगों की भांति प्रत्यक्ष क्यों नहीं होता। स्पष्ट है कि चेतना शरीर का गुण नहीं है।

3. अभाव से भाव नहीं

अभाव से भाव की उत्पत्ति तर्कतः संभव नहीं है। अतः जड़ पदार्थ जिसमें चेतना का अभाव होता है, उसमें चेतना का उत्पन्न होना संभव नहीं है

4. प्रत्यक्ष की सीमा का अतिक्रमण

चार्वाक प्रत्यक्ष के आधार पर इन्द्रियातीत सत्ता जैसे आत्मा, ईश्वर, मोक्ष, स्वर्ग, पुनर्जन्म आदि का खंडन करते हैं। किन्तु यहाँ एक प्रश्न है कि जब इनका प्रत्यक्ष होता ही नहीं तो इनकी सत्ता को अस्वीकरण भी प्रत्यक्ष की सीमा का उल्लंघन है।

उपरोक्त आलोचनाओं से यह स्पष्ट है चार्वाक अपनी ज्ञानमीमांसा के अनुरूप तत्वमीमांसा का तर्कतः प्रतिपादन नहीं कर पा सके। साथ ही तत्वमीमांसा में आन्तरिक विसंगतियाँ भी विद्यमान हैं। चार्वाक का तत्वमीमांसा भौतिकवाद, सुखवाद एवं भोगवाद को प्रश्रय देता है। यह नैतिक मूल्यों पर चोट है। किन्तु इन आलोचनाओं के बाद भी यह महत्वपूर्ण है कि चार्वाक ने रूढ़िवाद एवं अंधविश्वास को दर्शन से दूर किया।

जगत विचार

परिचय

चार्वाक का तत्वमीमांसीय चिंतन उनके ज्ञानमीमांसीय निष्कर्षों पर आधारित है। चूंकि ज्ञानमीमांसीय रूप से चार्वाक प्रत्यक्षवादी हैं, अत: वे केवल उन्हीं सत्ताओं को मानते हैं जिनका प्रत्यक्षीकरण संभव है। इस दृष्टि से चार्वाक जगत को सत एवं वास्तविक मानते हैं क्योंकि जगत का प्रत्यक्ष होता है।

जगत की उत्पत्ति - किससे

चार्वाक के अनुसार जगत की उत्पत्ति चार प्रकार के जड़ तत्वों के संयोग से होता है। ये जड़ तत्व हैं- जल, वायु अग्नि एवं पृथ्वी। चार्वाक अन्य दर्शनों की भांति पांचवे तत्व के रूप में आकाश को नहीं मानते हैं। चार्वाक के अनुसार आकाश का ज्ञान अनुमान से होता है जो यथार्थ ज्ञान का स्रोत नहीं है। अत: पाँचवे तत्व के रूप स्वीकृत आकाश का अस्तित्व नहीं है। चार्वाक मतानुसार जगत के सभी सजीव एवं निर्जीव पदार्थ का जन्म इन्ही चार जड़ पदार्थों के संयोग से होता है तथा अंत में इन्ही जड़ तत्वों में विलीन हो जाता है।

जगत की उत्पत्ति - कैसे

चार्वाक के अनुसार जड़ तत्वों से जगत की उत्पत्ति जड़ तत्वों में निहित स्वभाव से होता है। जगत का कोई प्रयोजन नहीं है। यह जड़ तत्वों के आकस्मिक संयोग का परिणाम है। यही आकस्मिकतावाद कहलाता है।